HINDI SUB-JUNIOR BOYS & GIRLS (STD. IV & V)

शिव - भाव से जीव सेवा

जब तक करोड़ों लोग भूखे और अशिक्षित रहेंगे , तब तक मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को विश्वासघाती समझूँगा , जो उनके खर्च पर शिक्षित हुआ है परन्तु उनपर तनिक भी ध्यान नहीं देता । वे लोग , जिन्होनें गरीबों को कुचलकर धन पैदा किया है और अकड़कर ठाट -बाट से चलते हैं , यदि अपने देशवासियों के लिए कुछ नहीं करते , तो निश्चय ही वे घृणा के पात्र हैं ।

प्रत्येक वास्तु का पहला अंश दीनों को मिलना चाहिए । शेष भाग पर ही हमारा अधिकार है । सब से पहले उस विराट की पूजा करो , जिसे तुम चारों ओर देख रहे हो। ये मनुष्य और पशु , जिन्हें हम आगे-पीछे और आस-पास देख रहे हैं , ये ही हमारे ईश्वर हैं। इनमें सबसे पहले पूज्य हैं हमारे अपने देशवासी ।

इसलिए , सभी को ईश्वर के ही समान देखो । मैंने इतनी तपस्या करके यही सार समझा है कि जीव जीव में वह अधिष्ठित है । जो जीवों पर दया करता है , वही व्यक्ति ईश्वर की सेवा कर रहा है । यदि तुम मनुष्य की , उस व्यक्त ईश्वर की उपासना नहीं कर सकते , तो उस ईश्वर की कल्पना कैसे कर सकोगे , जो अव्यक्त है । अपने तन, मन , और वाणी को जगत के हित के लिए अर्पित करो । तुमने पढ़ा है ....' मातृदेवो भव , पितृदेवो भव '। परन्तु मैं कहता हूँ ..... दरिद्रदेवो भव , मूर्खदेवो भव ..... गरीब , निरक्षर , मूर्ख और दुःखी, इन्हें अपना ईश्वर मानो । इनकी सेवा करना ही परम धर्म समझो ।

HINDI JUNIOR BOYS & GIRLS (STD. VI & VII)

आप अपने भाग्यविधाता

निःसंदेह यह जीवन एक कठोर सत्य है । परन्तु आत्मा उसकी अपेक्षा अनंतगुनी शक्तिमान है । वेदांत तुम्हारे कर्मफल के लिए किसी देवी-देवताओं को उत्तरदायी नहीं बनाता । वह कहता है , तुम स्वयं ही अपने भाग्य के निर्माता हो । तुम अपने ही कर्म से अच्छे और बुरे , दोनों प्रकार के फल भोग रहे हो ।

जो लोग अपने दुःखों और कष्टों के लिए दूसरों को दोषी मानते हैं , वे अभागे और दुर्बल मन के होते हैं । अपनेही कर्मदोष से वे ऐसी दशा में आ गए हैं पर वे दूसरों को दोषी ठहरा रहे हैं । इससे उनका कोई भला नहीं होता , अपितु वे और भी दुर्बल हो जाते हैं । अतः अपने दोषों के लिए तुम किसीको उत्तरदायी ना समझों , अपने कर्मों का उत्तरदायित्व स्वयं स्वीकार करो । कहो कि जिन कष्टों को हम अभी भोग रहे हैं वह हमारे ही कर्मों का फल है । अतः जो हमने निर्माण किया है उसे हम नष्ट भी कर सकते हैं ।

तुम अपने हाथों से अपनी आँखें मूँदकर कहते हो ... अन्धकार है । हाथ हटालो , प्रकाश दिखाई पड़ेगा । तुम ज्योतिस्वरूप हो । उठो , साहसी बनो , वीरता दिखाओ , अपने पैरों पर खड़े होने की चेष्टा करो । सारा उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर लो । तुम जो बल और सहायता चाहो, सब तुम्हारे भीतर ही विद्यमान है । याद रखों .... तुम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हो । इस ज्ञानरूप शक्ति के सहारे बल प्राप्त करो और अपने हाथों अपना भविष्य गढ़ लो !!!

HINDI SENIOR BOYS & GIRLS (STD. VIII to X)

सच्ची देश-भक्ति

महान कार्य करने के लिए सर्व प्रथम आवश्यकता है हृदय की अनुभव शक्ति । क्या तुम हृदय से अनुभव करते हो कि देवताओं और ऋषिओं के लाखों वंशज आज पशुतुल्य बन गए हैं ? ... क्या तुम हृदय से अनुभव करते हो कि लाखों लोग आज भूखों मर रहे है और कई शताब्दियों से इसी भाँति भूखों मरते आये हैं ? ... क्या तुम यह सब सोचकर बेचैन हो जाते हो ?.... क्या इस भावना ने तुम्हारी निद्रा छीन ली है ?... क्या वह तुम्हारे रक्त में समाकर , तुम्हारी धमनियों में बहती है ?... तुम पागल से हो गए हो ? क्या देश की दुर्दशा की चिंता ही तुम्हारे ध्यान का केंद्र बन बैठी है ? और क्या इस चिंता में व्याकुल हो जाने से तुम अपने नाम-यश , पुत्र-कलत्र , धन-संपत्ति , यहाँ तक की अपने शरीर की सुध भी बिसर गए हो ? यदि 'हाँ' तो जानो कि तुमने देश-भक्ति की पहली सीढ़ी पर कदम रखा है. हाँ , केवल पहली ही सीढ़ी पर .

क्या इस दुर्दशा का निवारण करने के लिए तुमने कोई मार्ग निश्चित किया है ? लोगों की निंदा ना कर , उनकी सहायता का कोई उपाय सोचा है ? क्या अपने स्वदेशवासियों के दुःखों को कम करने के लिए दो सान्त्वनादायक शब्दों को खोजा है ? ..... किन्तु इतने ही से काम नहीं होगा । ..... क्या तुम पर्वताकार विघ्न-बाधाओं को लाँघकर कार्य करने के लिए तैयार हो ? यदि सारी दुनिया हाथ में तलवार लेकर तुम्हारे विरोध में खड़ी हो जाए , तो भी तुम जिसे सच समझते हो उसे पूरा करने का साहस करोगे ? ... उसके पीछे लगे रहकर अपने लक्ष्य की ओर सतत बढ़ते रहोगे ? क्या तुममें ऐसी दृढ़ता है ? ..... यदि तुममें ये बातें हैं , तो तुममें से प्रत्येक व्यक्ति अदभुत कार्य कर सकता है ।